हिन्दी कविता

Nursery

चेतना विकास मूल्य शिक्षा

अभिभावक विद्यालय

मूल्य:112/-

चेतना विकास मूल्य शिक्षा संस्कार समिति द्वारा संचालित

अभिभावक विद्यालय

वी.आई.पी. रोड़, रायपुर, छ.ग.

छत्तीसगढ़ शासन द्वारा मान्यता प्राप्त

संरक्षण एवं मार्गदर्शन
श्री. ए. नागराज जी
प्रणेता
मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद)
श्री नर्मदांचल, भजनाश्रम, अमरकंटक
जिला - अनूपपुर (मध्यप्रदेश)

मानवीय शिक्षा शोध केन्द्र
अभ्युदय संस्थान, अछोटी, दुर्ग (छ.ग.)

पूर्व प्राथमिक पाठ्यक्रम - लेखकगण एवं अध्यापिकागण

अनामिका वरू, निताशा त्यागी, चानी चावड़ा, ज्योति पुराणिक, सुचित्रा श्रीवास्तव, मीना गाड़ोदिया, अनीता शाह, नीति जैन, पूनम साहू, ज्योति अग्रवाल, सुवर्णा शास्त्री, शालू अग्रवाल, गौरी साहू, ममता जैन, डॉली, नीतू शर्मा, सोनालिका अग्रवाल, संध्या शर्मा, पिंकी पारेख, रेखा अग्रवाल, नीधि महाजन, रोज़ी, गुरलीन, सुषमा अग्रवाल, रजनी अग्रवाल, पुनीता चावड़ा, प्रियंका शर्मा, वंदना शर्मा, उषा अग्रवाल, रचिता अग्रवाल, शीला गोपाला, रीतिका अग्रवाल, शीतल अग्रवाल, नवनीत जैन, श्रेया मिश्रा, दीप्ती चावड़ा

लोगो डिजाईन : सुषमा अग्रवाल
चित्रांकन : रंजीत भाटिया, राजेन्द्र ठाकुर
लेआउट डिजाईन : व्यू डिजाईन, रायपुर

चेतना विकास मूल्य शिक्षा
अभिभावक विद्यालय

हिन्दी कविता

नर्सरी

नाम ....

पता ....

....

वंदना

वंदना उनकी करें, जिनसे सुशोभित है धरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

जिनसे दिशा हमको मिली, नित मानवीय मार्ग की।
पथ मिला निश्चित हमें थी, कामना जिस मार्ग की।।
कृतज्ञता से सौम्यता की, नित्य आयी निरंतरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

जिनका है चिन्तन शुभ यही, कैसे हो मानव सुखमयी?
प्रेरणा से जिनकी है, मानव का जीवन सुखमयी।।
श्रद्धा समर्पित जिनसे आए, मानवीय परम्परा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

सबके सुख की कामना ले, रहती जिनकी कल्पना।
निकली जिनसे मानवीय पथ, हेतु निश्चित योजना।।
पूज्यता उन हेतु जिनसे, है सुसज्जित वसुन्धरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

–प्रदीप पूरक, बिजनौर (उ.प्र.)

प्राक्कथन

मानवीय शिक्षा का प्राक्कथन एक आवश्यकता के रूप में हमें महसूस हुआ क्योंकि यह पाठ्यपुस्तिका का उपक्रम नर्सरी कक्षा से प्रस्तुत किया गया है। क्रम से परंपरागत होने तक सिलसिला बना ही रहेगा। सहअस्तित्व अपने स्वरूप में व्यापक वस्तु में ही सम्पूर्ण एक–एक वस्तु जैसे परमाणु, अणु, ग्रह, गोल, सौर व्यूह, आकाश गंगा, यह डूबी, भीगी, घिरी होने के आधार पर नियंत्रण, क्रियाशीलता और ऊर्जा सम्पन्नता प्रत्येक वस्तु में नित्य प्रमाण के रूप में देखा गया है। साथ में यह भी समझा गया है कि व्यापक वस्तु में समाहित सम्पूर्ण एक–एक वस्तुओं की अविभाज्यता नित्य वर्तमान है। यही सह–अस्तित्ववादी विश्व–दृष्टिकोण का मूल रूप है। ऐसे सहअस्तित्व नित्य प्रभावी रहना स्वाभाविक है।

सहअस्तित्व को ध्यान में रखते हुए प्रथम कक्षा से अर्थात् अक्षराभ्यास से चलकर शब्दों का अभ्यास और शब्दों के अभ्यास से अर्थ का अभ्यास, अर्थों के अभ्यास के तात्पर्य में हर शब्द किसी वस्तु का, क्रिया का अथवा फल–परिणाम का नाम है। ऐसा अर्थ इंगित होना ही शब्द से अर्थ समझा गया है, इसलिए अर्थबोध करने के उपक्रम में शिक्षा विधा को अध्ययन के रूप में प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्रस्तुत हुआ। यह पठन विधि से अर्थ बोध तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसे प्रस्तावित करना इसलिए आवश्यक समझा गया कि मानव सह–अस्तित्व विधि से ही समुदाय चेतना से मानव चेतना में संतुलित होना है। मानव चेतना का प्रयोजन, समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्वपूर्वक जीने का प्रमाण है। इससे अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था की पहचान होना स्वाभाविक है।

यह तो सटीक है कि विगत विधि से जो पाठ–पठन का लक्ष्य था, उसे आगे पढ़ाने के जिन भी उपायों को खोजा गया है, वह सब सार्थक है, मूलतः मानवीय शिक्षा के अभाववश सामुदायिकता, मतभेद, साम, दाम, दण्ड, भेद, परस्पर समुदायों की निहित अतिशोधों का विश्वास प्रयोग हो चुका है। इन सब अभिशापों से मुक्ति पाने की आकांक्षा मानव में निहित होना भी पाया गया, इसलिए मानवीय शिक्षा का निश्चयीकरण आवश्यक समझा गया है। इसे क्रियान्वयन करने की क्रमविधि से प्रस्तुत किया।

मानवीय शिक्षा में मानव का अध्ययन प्रधान उद्देश्य है। इस उद्देश्य को सार्थक बनाने के क्रम में नर्सरी कक्षा से ही सूत्रपात रूप में मूल्य संबंधी और शरीर के अवयव संबंधी शब्दों का अधिकतम चयन किया गया है। साथ में परस्पर मानव संबंधों से संबंधित शब्दों का चयन किया गया है। इसे हर बालक अथवा किशोर आसानी से पहचान पायेगा। ऐसी हमारी स्वीकृति है। यह सार्थक और सफल होना पाया गया है। भविष्य में मूल्यांकन होता रहेगा। इस विधि से सर्वशुभ होने की कामना है।

ए. नागराज
प्रणेता एवं लेखक
मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)
श्री नर्मदांचल, भजनाश्रम, अमरकंटक
जिला अनूपपुर (मध्यप्रदेश)

लेखकीय

मध्यस्थ दर्शन (सह अस्तित्ववाद) के प्रणेता श्री ए. नागराज जी द्वारा हुए अनुसंधान में उन्हें सम्पूर्ण अस्तित्व, सहअस्तित्व सहज रूप में होना रहना अनुभव हुआ। जो "मध्यस्थ दर्शन" "सहअस्तित्व वाद" शास्त्र रूप में प्रस्तुत हुआ। इस अनुसंधान से शिक्षा और व्यवस्था विकल्प रूप में प्रस्तुत हुई है।

''मध्यस्थ दर्शन'' सह अस्तित्ववाद से निःसृत्त हुई "चेतना विकास मूल्य शिक्षा"

श्री ए. नागराज जी के मार्गदर्शन में चेतना विकास मूल्य शिक्षा, प्राथमिक विद्यालय का पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। उनके अनुसार पांचवीं तक व्यवहारिक शिक्षा हो। व्यवहारिक शिक्षा के चार स्तंभ हैं :– संबोधन, सहयोग, आज्ञापालन और नियंत्रण।

बालक जन्म से सत्यवक्ता, न्याय एवं सही चाहने वाला होता है। माता–पिता–अध्यापक सही है, इसी विश्वास से बच्चा अपनी यात्रा शुरू करता है।

प्रत्येक बालक शोध में लगा ही रहता है। जिज्ञासु है, विचारशील है, कल्पनाशील है, समझने की असीम क्षमताओं सहित है।

बालक जिस परिवेश में रहता है उसी भाषा में समझना उसके लिए सरल होता है। समझना ही शिक्षा–संस्कार है।

तीन वर्ष का बालक जब विद्यालय आता है उसके पास भाषा कम भाव अधिक होते हैं। यही उसका खजाना है । इस उम्र में बच्चे माँ के सबसे करीब होते हैं। मूल्य आधारित शिक्षा इन्हीं संबंधों में निरंतरता लाती है, जैसे बच्चा माँ को जानता है तो ''अ–अम्मा'' कहने पर बच्चा अपने आप अम्मा की व्याख्या करने लगता है। अम्मा मुझे खाना खिलाती है, अम्मा मुझे सुलाती है, अम्मा मुझे प्यार करती है। घर जाकर अम्मा के गीत गाता है। माँ खुश होती है, अपनी ममता करती है। शिक्षक का आदर करने की शिक्षा देती हैं। शिक्षक पुनः "आ–आदर" "म–ममता" , "उ–उपकार" जैसे शब्दों का अर्थ बोध कराते हैं। यहाँ से शुरू होता है शिक्षा का मानवीयकरण जहाँ शिक्षक विद्यार्थी एवं अभिभावक मूल्यों से बंध जाते हैं।

भाषा सब कुछ नहीं पर बहुत कुछ है। भाषा जितनी सार्थक एवं सम्मानजनक होगी उतनी ही स्वस्थ मानसिकता का विकास होगा। यह जिम्मेदारी परिवार एवं विद्यालय दोनों की है।

मूल्य आधारित शिक्षा तभी सफल होगी जब माता–पिता एवं शिक्षक स्वयं समझदार, ईमानदार एवं जिम्मेदार होंगे।

पाँच वर्ष की आयु तक बालक–परिवार में माता–पिता के साथ तीन पीढ़ी के बीच रहकर अनुकरण–अनुसरणपूर्वक सीखें यहीं बालक के लिये सहज प्रक्रिया हैं परन्तु आज की व्यस्ततम जीवन शैली, अनन्तः इच्छाओं को पूरा करने की दौड़, अपने बालक को प्रतियोगिता की दूनिया में अव्वल देखने की कामना ने दो–दो वर्ष के बच्चों को भी घर से बाहर भेजने बाध्य किया है एवं शिक्षा को आज अग्रिम व्यवसाय के दर्जे पर ला खड़ा किया है।

अभिभावक विद्यालय एक शुभ शुरूआत है शिक्षा को व्यवसाय से मुक्त करने की, यहां अभिभावक ही अध्यापक है जो बिना प्रतिफल अपेक्षा अपने बच्चों के साथ–साथ आस–पास के अन्य बच्चों की शिक्षा एवं संस्कार एवं स्वास्थ्य की जिम्मेदारी स्वयंस्फूर्त वहन किये हैं।

चेतना विकास, मूल्य शिक्षा आधारिक पूर्व प्राथमिक पाठ्यक्रम की पुस्तिका प्रथम बार लिखी गई है अतः इसमें संशोधन एवं परिमार्जन की अपार संभावनाएं हैं। मानवीय शिक्षा शोध में लगे सभी से सतत् मार्गदर्शन की अपेक्षा है।

लेखकगण

मैं और मेरा परिवार

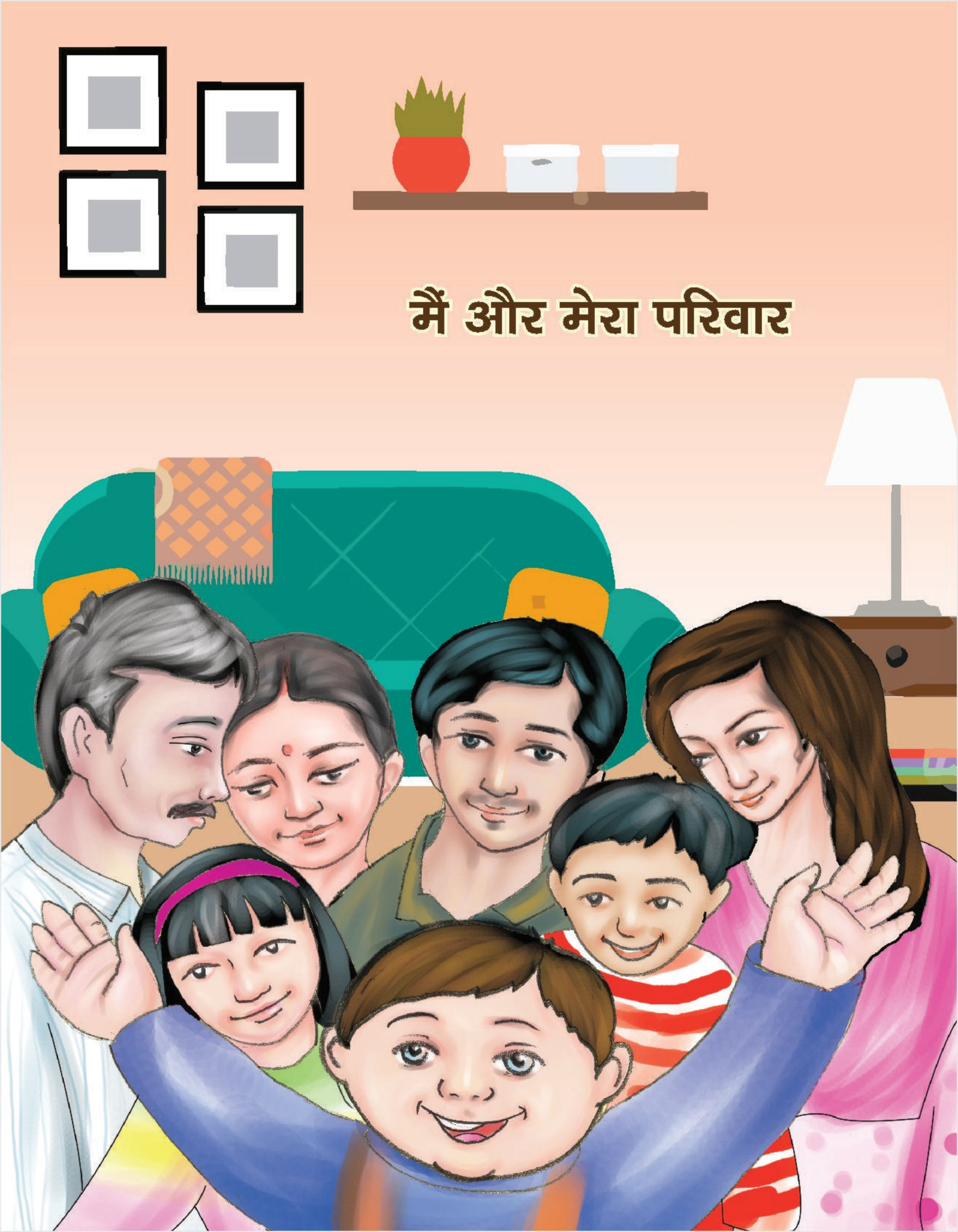

माँ

माँ को जानू माँ को जानू,
क्या-क्या करती है पहचानू।
सुबह-सुबह जल्दी उठ जाती,
मुझे उठाती और नहलाती।
कंघी करके मुझे खिलाती,
अपने संग माँ मुझे सुलाती।
ममता और प्यार बरसाती।

अम्मा कहूं... या मम्मा

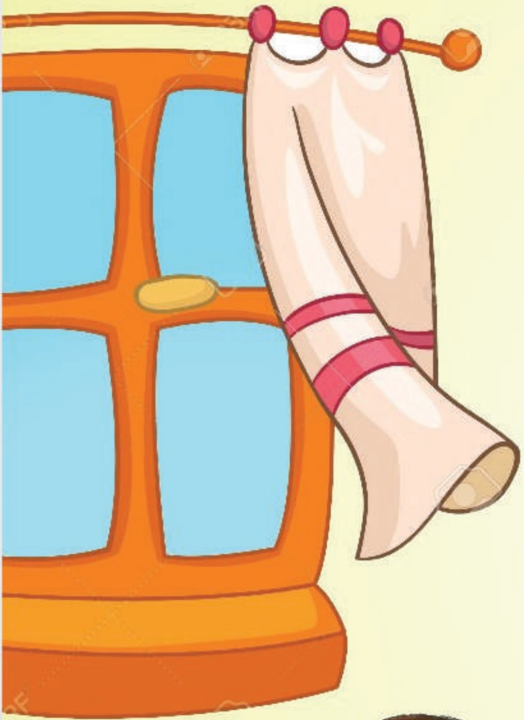

अम्मा कहूँ या मम्मा
अम्मी कहूँ या मम्मी
दाई कहूँ या आई
जाँ कहूँ या मां

मेरी प्यारी प्यारी अम्मा
मेरी प्यारी अम्मा
गोद में सुलाओ ना
मेरी प्यारी अम्मा
गोद में खिलाओ ना
मेरी प्यारी अम्मा
गोद में बिठाओ ना
मेरी प्यारी अम्मा

अम्मा कहूँ या मम्मा
अम्मी कहूँ या मम्मी.........

हम सब अच्छे बच्चे हैं

हम सब अच्छे बच्चे हैं
मम्मी जी पापा जी कहते हैं
हम सब अच्छे बच्चे हैं
भाई–जी बहन–जी कहते हैं
हम सब अच्छे बच्चे हैं
अध्यापिका जी कहते हैं
हम सब अच्छे बच्चे हैं
ऐसे नमस्ते करते हैं

सार्थक संवाद

अध्यापिकाजी – बेटा जी नमस्ते, सभी बच्चों को नमस्ते। आपको भी नमस्ते, आपको भी नमस्ते।

बालक – नमस्ते अध्यापिकाजी

अध्यापिकाजी – खुश रहो बेटा जी।
चलिये अपनी कक्षा में चलते हैं।
हाथ पकड़ेंगे मेरा या अपने आप चलेंगे?

बालक – मैं पकडुँगा।
मैं अपने आप।

अध्यापिकाजी – बेटा जी क्लास में जाने से पहले हम सब अपने जूते–चप्पल लाइन से लगायेंगे, ठीक रहेगा।

बालक – ठीक है।

अध्यापिकाजी – लाइये बेटा जी मै लगा दूँ

बालक – नहीं मैं लगाऊँगा।
मैं भी अपने आप लगाऊँगा।
ये मेरी चप्पल के ऊपर रख दिये

अध्यापिकाजी – कोई बात नहीं बेटा जी अभी हम सीख रहे हैं।
– चलिए एक–एक करके रखते हैं।

बालक – हाँ ठीक है।

अध्यापिकाजी – देखो बच्चों कितना सुन्दर दिख रहा है। आपको कैसा लग रहा है?

बालक – अच्छा लग रहा है। रोज लगायेंगे।

अध्यापिकाजी – जरूर... हम रोज अपनी चप्पलें लाईन से लगायेंगे। अब क्लास में चलते है।

बालक – चलो... चलो... चलो...

अध्यापिकाजी – सबसे पहले मैं अपना बैग अपनी जगह पर रख देती हूँ।
– आप सब भी जहाँ बैठे हैं वहाँ अपना–अपना बैग रख लीजिए।
– Good... कितनी जल्दी समझते हैं बेटा जी
आप सब, आप लोगों के साथ मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।

मम्मी जी

मम्मी जी–मम्मी जी बोलूँ
मम्मी जी के साथ मैं खेलूं।
उनके जैसी भाषा बोलूं
उनके जैसा बनना चाहूं।।

सार्थक संवाद

माताजी

अध्यापिकाजी – आप अपनी माताजी को क्या कहते हो बेटाजी?

बालक – अपनी माताजी को मैं मम्मीजी कहता हूँ।

अध्यापिकाजी – मम्मीजी क्या क्या करती हैं?

बालक 1 – मम्मीजी मुझसे बहुत प्यार करती हैं।

बालक 2 – मम्मीजी मुझे नहलाती हैं।

बालक 3 – कपड़े पहनाती हैं।

बालक 4 – तैयार करती हैं।

बालक 5 – फिर मम्मीजी मुझे खाना खिलाती हैं।

अध्यापिकाजी – अच्छा आपकी मम्मीजी तो बहुत अच्छी हैं।

– आप जब सो जाते हो तब आपका ध्यान रखती हैं।

– आपको पता है वो आपको उठाती भी हैं।

– मम्मीजी हमेशा आपके बारे में ही सोचती हैं।

– आपको कब भूख लगती है, कब प्यास लगती है, कब आपको बाथरूम जाना है सब मम्मीजी को पता होता है।

– आप सब जब विद्यालय आते हो मम्मी जी का आपके बिना मन भी नहीं लगता।

– मम्मीजी इन्तजार करती हैं कि कब मेरे बेटाजी घर आयेंगे।

– होता है ना ऐसा, मम्मी जी आप लोगों का wait करती हैं।

बालक – हाँ, मम्मी जी मेरा इन्तजार करती हैं।

अध्यापिकाजी – बेटाजी आप सब खुश रहना तो मम्मी जी भी खुश रहेंगीं।

अध्यापिकाजी – आज आपके टिफिन में क्या है?

बालक1 – आज मम्मी जी ने आलु पराठा रखा है।

अध्यापिकाजी – आपके टिफिन में क्या है बेटाजी

बालक2 – मैं पुलाव लाया हूँ आज मम्मी जी ने पुलाव दिया है।

बालक3 – और मैं सैंडविच लाया हूँ, मम्मीजी ने सैंडविच बना कर दिया है।

अध्यापिकाजी – क्या बात है बच्चों आपके टिफिन में तो बहुत अच्छी–अच्छी चीजें हैं।

बालक – हॉ मुझे पसन्द भी हैं।

अध्यापिकाजी – मम्मीजी आप लोगों के लिए सुबह – सुबह ये सब बनाती पाती है?

बालक – हाँ बना लेती हैं।

अध्यापिकाजी – तब तो उनको जल्दी उठना पड़ता होगा।

बालक – हॉ मम्मी तो जल्दी उठ जाती हैं।

अध्यापिकाजी – आपको नहलाता कौन है?

बालक – मम्मीजी।

अध्यापिकाजी – कपड़े कौन पहनाता है।

बालक – मम्मीजी।

अध्यापिकाजी – दूध भी तैयार करती हैं।

बालक – हॉ दूध भी देती हैं, मैं पी लेता हूँ।

अध्यापिकाजी – अरे आपकी मम्मीजी सुबह–सुबह कितना काम करती है आपको उठाती हैं, नहलाती हैं, कपड़े पहनाती, दूध पिलाती है, नाश्ता बनाती हैं, फिर आपको विद्यालय भेजती हैं।

बालक – हाँ उठाती हैं, नहलाती हैं, कपड़े पहनाती हैं, दूध पिलाती हैं नाश्ता बनाती है, और हमको विद्यालय भेजती हैं।

अध्यापिकाजी – आज आप सब घर में जाकर मम्मीजी को बताना कि हमको पता है आप कितना काम करती हैं, ठीक है – बताओगे?

बालक – हॉ बतायेंगे

मेरा शरीर

छोटा सा शरीर मेरा।
बढ़ रहा है हर दिन।।
दूध पीकर हाँ.. हाँ..
फल खाकर हाँ.. हाँ..
बढ़ रहा है हर दिन।।

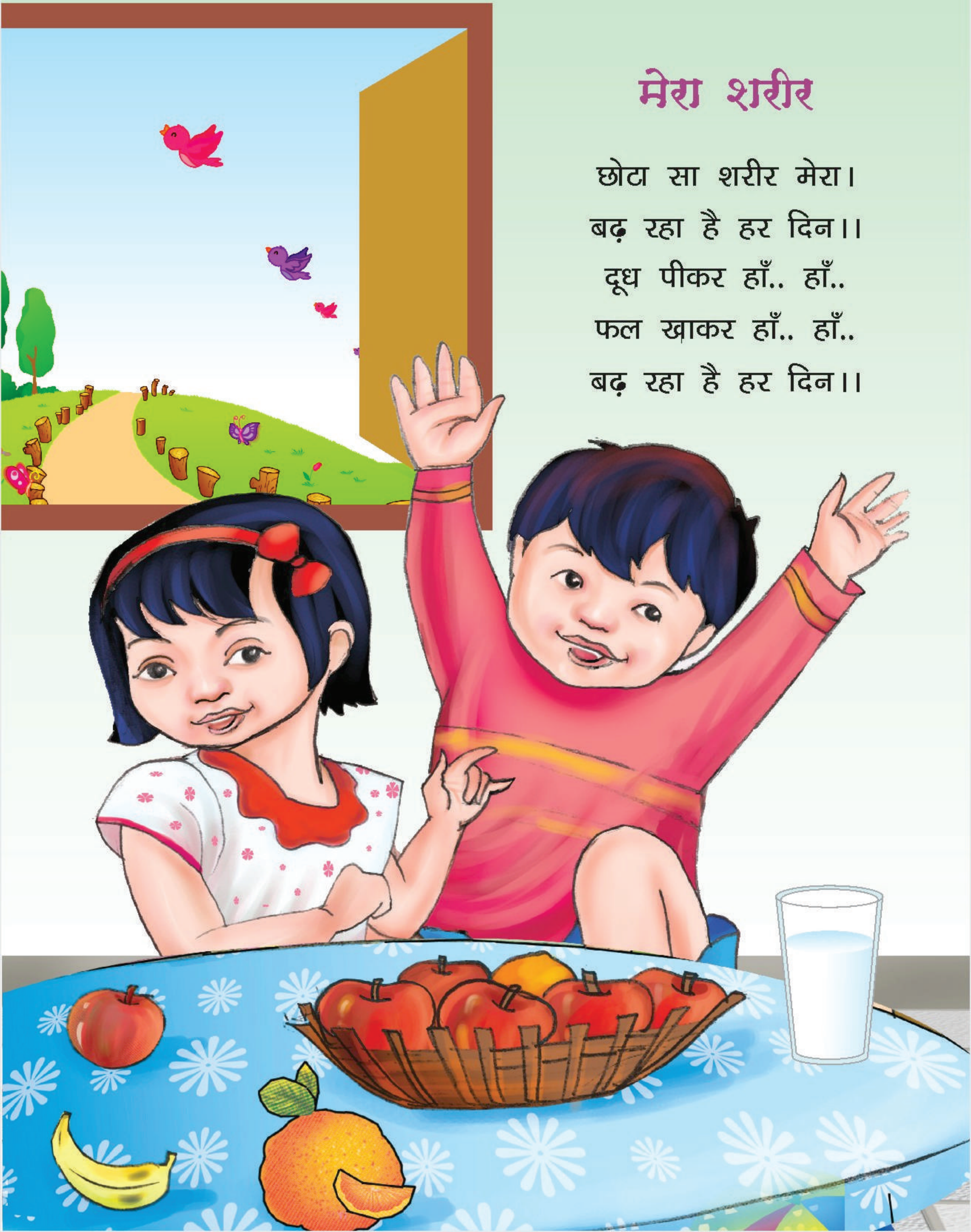

सार्थक संवाद

मेरा शरीर

बालक — यह मेरा शरीर है
— यह मेरा सिर है
— यह मेरा चेहरा है
— यह आंखें हैं, कान है़, नाक है़, मुंह है,
— यह मेरा गला है, यह पेट है
— यह मेरे हाथ हैं, यह अँगुलियॉ हैं
— यह मेरे पैर हैं, यह पैर की अँगुलियां हैं।

अध्यापिकाजी —हमें अपने शरीर को साफ रखना चाहिये।
— बालों में तेल डालते हैं तो बाल मजबूत होते हैं
— नहाने से शरीर साफ रहता है
— रोज सुबह उठकर Toilet जायेंगे तो पेट स्वस्थ रहेगा
— हाथ पैर की अँगुलियों के नाखुन हमेशा छोटे हों
— नाखुन बड़े होते हैं तो उसमें मैल जमता है
— इसलिए नाखुन छोटे होने चाहिये।
— बेटाजी हम जब भी भोजन करेंगे, हाथ धोकर,
पोछकर फिर करेंगे।

बालक — हाँ, मौसीजी रोज हमारा हाथ धोती हैं, पोछती भी हैं।

अध्यापिकाजी —अच्छा, आप मौसीजी को Thank you कहना।
— जब आप खाना खा लेते हो तब फिर एक बार मुँह—हाथ धोना
और पोछना, फिर खेलने जाना।

बालक — ठीक है।

अध्यापिकाजी — आप सब इतनी बातों पर ध्यान देंगे तो हमेशा स्वस्थ रहेंगे।
मम्मीजी, मौसीजी और अध्यापिकाजी सब आपका सहयोग करेंगे।

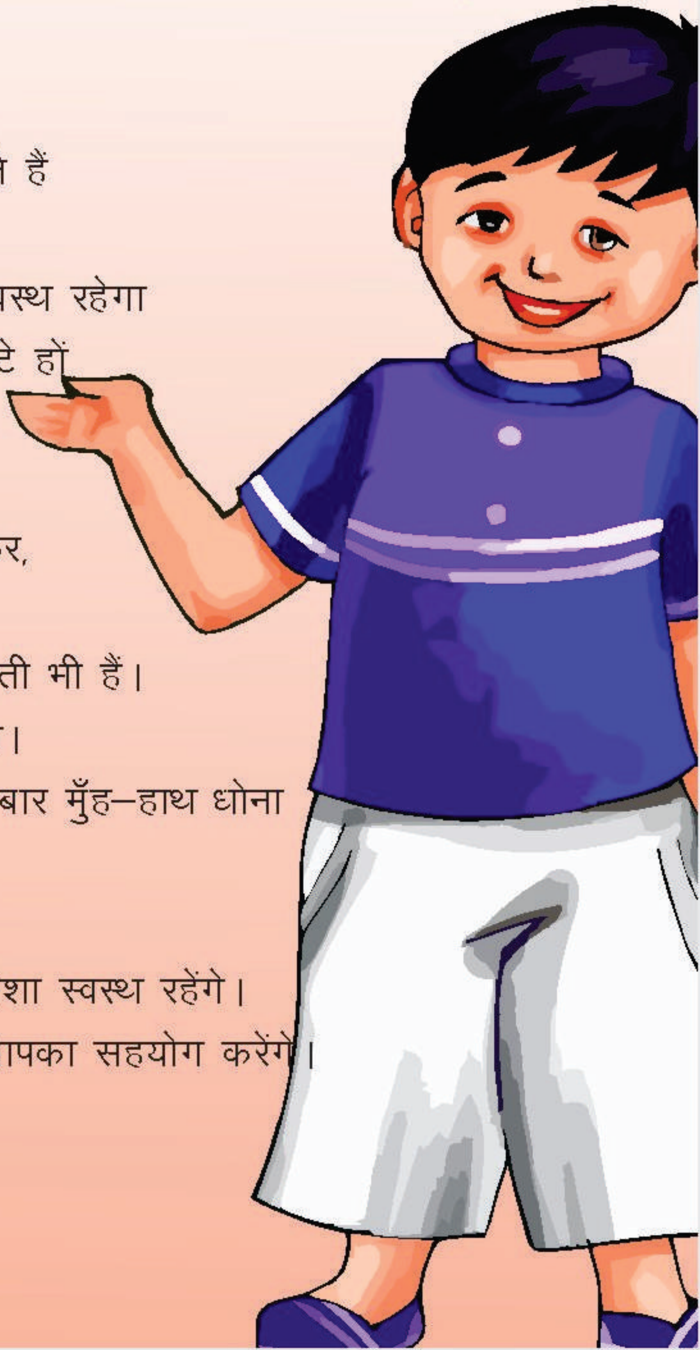

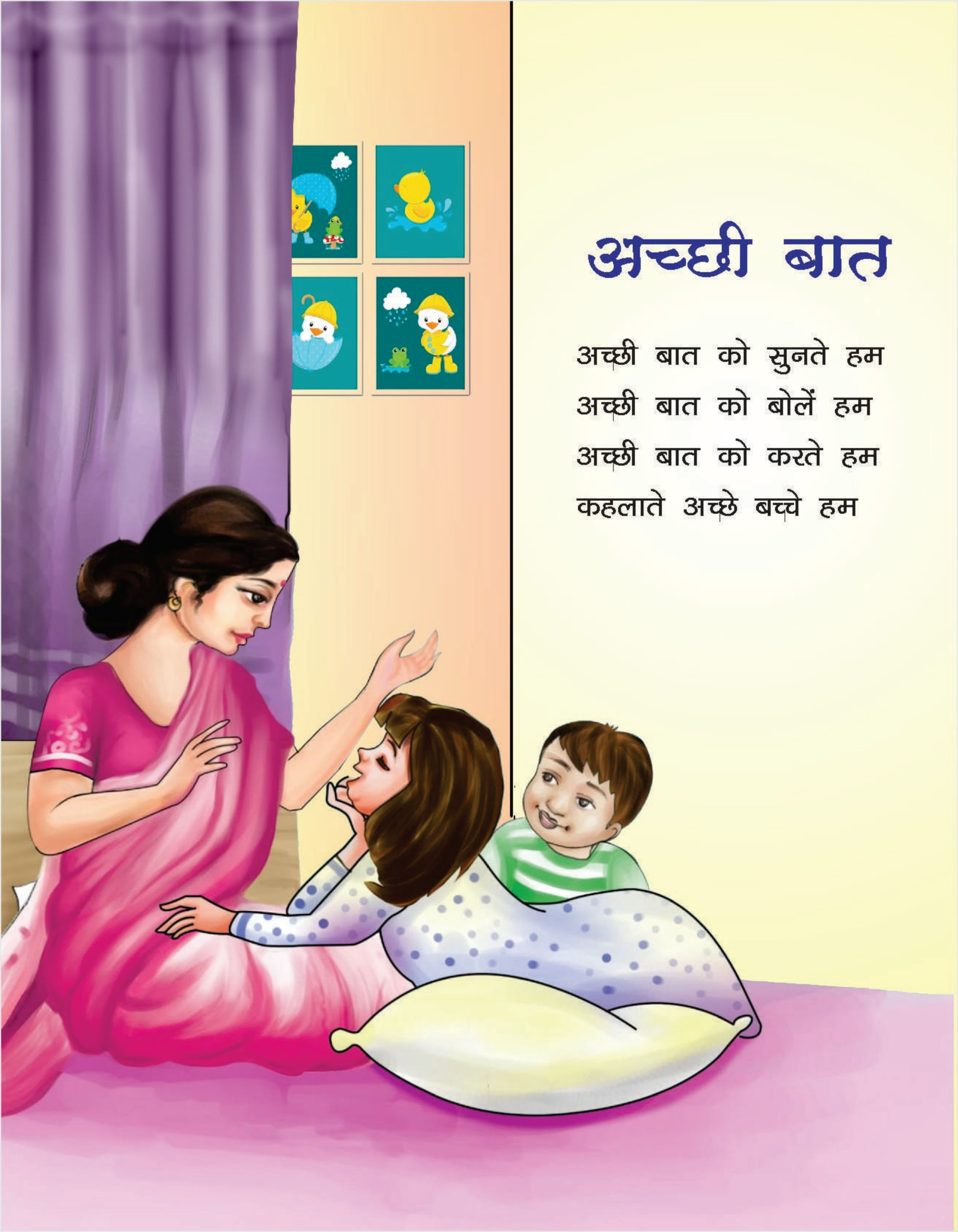

अच्छी बात

अच्छी बात को सुनते हम
अच्छी बात को बोलें हम
अच्छी बात को करते हम
कहलाते अच्छे बच्चे हम

हम हम हम ...

क्या क्या दिन भर करेंगे हम
खेलेंगे खेलेंगे खेलेंगे हम
दौड़ेंगे दौड़ेंगे दौड़ेंगे हम
कूदेंगे कूदेंगे कूदेंगे हम
सबका ध्यान रखेंगे हम
खुश रहते हैं हम हम हम

भाई जी... बहन जी...

हम सारे बच्चे – हम सारे बच्चे
भाईजी बोलें बहन जी बोलें
साथ साथ पढ़ें, और साथ साथ खेलें
हम सारे बच्चे – हम सारे बच्चे
मिलजुलकर हम रहते, ऐसे जीकर खुश रहते
हम सारे बच्चे – हम सारे बच्चे

सार्थक संवाद

भाईजी – बहनजी

अध्यापिकाजी – आज हम भाईजी–बहनजी की बातें करेंगे।
ये आपके क्या लगते है बेटाजी?

बालक – यह मेरे भाईजी हैं
यह मेरी बहनजी हैं
विद्यालय में भी सभी मेरे भाईजी बहनजी हैं।
हम साथ–साथ खेलते हैं।
हम साथ–साथ खाना खाते हैं।
हम साथ–साथ विद्यालय जाते हैं।
हम साथ–साथ पढ़ते हैं।
हम साथ–साथ खुश होते हैं।

अध्यापिकाजी – अरे वाह आप तो बहुत अच्छे बच्चे हैं।
जब आपके भाईजी को चोट लगती है
तब आपको भी बुरा लगता है?

बालक – हॉ मुझे तब अच्छा नहीं लगता ।

अध्यापिकाजी – जब आपके भाईजी–बहनजी खुश होते हैं
आप भी खुश होते हैं?

बालक – हाँ मैं भी खुश होता हूँ।

अध्यापिकाजी – जब आप खुश रहते हैं, यही
तो सहयोग है।
हमेशा खुश रहना और
सहयोग करना।
इतना ही तो काम है बच्चों का।

पानी

पानी गिरा झम–झम–झम
छाता लेकर निकले हम।
पानी जब भी आता है
सबकी प्यास बुझाता है
पानी जब भी आता है
सबके मन को भाता है।